साझीदार प्रकृति

उसकी सुंदरता से मनमोहित हो जाना,
उसकी हवाओं के साथ मन में गीत गुनगुनाना,
घास के ऊपर बैठकर खुले आसमान को निहारना,
पूरी सृष्टि जैसे रूक सी गई हो
और मन में बहुत से विचारों का आना।

प्रकृति का प्रभाव मुझपर कुछ ऐसा पड़ता है,
एक वही सुख–दुख का साथी लगता है।
आकाश और सागर, सनातन और शांतिपूर्ण,
सूर्य की किरणें कश्ती मन को सकारात्मक भावों से पूर्ण।

उसे मिट्टी के गुलाब की खुशबू मनमोह जाती,
गर्मियों में आमों का स्वाद ज़ुबान पर छोड़ जाती।।

नदियों के कल–कलाने की धुन,
नन्हीं चिड़िया वही है अपने घोंसलों को बुन,
यही कबूतर पानी पीता रहा दोनों को चुन,
आ जाए कोई फरिश्ता और दे साथ मेरा,
मेरी मनःस्थिति को सुन।

पीपल के पेड़ की छाँव तले,
अपनी परेशानियों को छोड़ देना,
उन बारिश की बूंदों में अपना अहंकार धो देना।

सभी प्राकृतिक तत्वों से ढेर सारी बातें करना,
हिमालय की ऊँची, शाँत नदियों में खुद को ढूँढना,

सूरज ढलते तक स्वयं में एक आशावादि को तलाशना
और जरूरत पड़े तो कल इस दोस्त के पास फिर आ जाना।

सलोनी अग्रवाल